वैदिक संस्कृति का चीरहरण

पंण्डित परन्तप प्रेमशंकर (सिद्धपुर)

भीष्मपितामह, महाभारत का एक उदार चरित पात्र हैं, तथापि द्रौपदी के चीरहरण पर मौन रहने के कारण, उनकी श्वेत एवं निर्मल प्रतिभा पर एक कलंक भारतीय इतिहास में आज भी अंकीत हैं। आज कई बहुश्रुत वक्ता हमारी सभ्यता एवं सांस्कृति को विकृत एवं कलंकित करने का दुःसाहस कर रहे है। हमारी परम्परायें पूर्णतया विज्ञान सम्पन्न है, जिसका आज विश्व के महावैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे है, तब ऐसे धृणास्पद कार्य के लिए, विद्वानों की निष्क्रियता, ऐसे वक्ताओं की स्वच्छन्दता को खुल्ला दौर देती हैं। हमारी संस्कृतिका चीरहरण होनेपर, हमारा मौन या पलायनवाद, भी भीष्मपितामह के मौन जैसा ही माना जाएगा।

व्यासपीठ की एक मर्यादा होती है, व्यासपीठ धर्मशास्त्र के संरक्षण, संवर्धन एवं समर्थन के लिए हैं। परमात्माने जनसामान्य के कल्याण के लिए जो शब्दावतार लिया है, वही शास्त्र हैं। **अवतीर्णो जगन्नाथः शास्त्ररूपेण वै प्रभुः** (शाण्डिल्य स्मृ ४.११३), **श्रुतिस्मृती ममेवाज्ञ.** शास्त्र भगवान की आज्ञा है। पद्मपुराण **- वेदनिंदां प्रकुर्वन्ति ब्रह्मचारस्यकुत्सनम्। महापातकमेवापि ज्ञातव्यज्ञानपण्डितैः।। श्रुतिस्मृत्युक्तमाचारं यो न सेवते वैष्णव। स च पाखण्डमापन्नो** रौरवे नरके वसेत्।। **<u>वेदबाह्यव्रताचाराः श्रौतस्ममार्त्तबहिष्कृताः</u>। पाखण्डिन इति ख्याता** न **सम्भाष्यद्विजातिभिः** - लिंगपुराण पूर्वार्द्ध। **श्रुतिस्मतिभ्यां विहितो धर्म्मो वर्णभ्रमात्मकः** - लिंगपुराण, श्रुति-स्मृति-पुराण विहित कर्म (धर्म), सभी वर्णोमें भ्रम पैदा करता है और पतनगामी है। शास्त्र विरूद्धाचार या विधिहीन कर्म करनेवाले वक्ताओं के लिए पुराणों में **पाखण्डी** शब्दप्रयोग आता है, ऐसे सेंकडो प्रमाण पुराण-स्मृत्यादि में उपलब्ध है। ऐसे विधिविधान या शास्त्र की उपेक्षा करनवाले, स्वच्छन्दी वक्ताओं को धर्मद्रोही या धर्मद्वेषी कहे तो सर्वथा उचित ही है, वे सदैव त्याज्य एवं अधःपतित माने जाते है। ब्राह्मणोंका विरोध, कर्मकाण्डका विरोध, स्वच्छन्दतापूर्ण शास्त्रों का अर्थघटन इत्यादि बहुश्रुत वक्ताओं के लिए, एक गौरव एवं एक सस्ती प्रतिष्ठा का मार्ग बन गया है।

परमार्थाय शास्त्रीतम् सर्व प्रथम तो इन दोनों महापुरूषों को प्रार्थना करना चाहता हुं, जो श्रुति भी कहती हैं **शास्त्रज्ञोऽपि स्वातंत्रेण ब्रह्मज्ञानान्वेषणं न कुर्यात्** (मु.उप) वाक्सामर्थ्य होने का अर्थ ये नहीं है, आप कुछ भी बोले, कुछ भी आचरण करे और शास्त्र एवं बहुऋषि मत, विधि-विधानों का उपहास करे। **शास्त्रं तु अन्त्य प्रमाणम्** शास्त्र अंतिम प्रमाण है। शास्त्र स्वयं भगवान की आज्ञा है, **श्रुतिस्मृति ममैवाज्ञे, शास्त्रपूर्वके प्रयोगे अभ्युदयः** यथा शास्त्रोक्त विधान से ही परम श्रेयस् - कल्याण होता है। चलो पहले नक्की करे शास्त्र किसे कहते हैं।

धर्मशास्त्र किसे कहते है ? शास्त्र का प्रधानाधार में श्रुति-स्मृति मुख्य है । **पुराण न्याय मिमांसा धर्मशास्त्राङ्ग मिश्रिताः । वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य चतुर्दश ।।** याज्ञ. स्मृति १.३ । लिंगपुराण – **श्रुतिस्मृतिभ्यांविहितो धर्म्मो वर्णाश्रमात्मकः** भगवान शंकराचार्यजी तो कहते है कि **वेदस्तादुपजीविस्मृतिपुराणादि च । श्रौतसूत्र में श्रुतियों में प्रतिपादित यज्ञीय विधानों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है** । सर्व प्रथम **शब्दप्रमाण** में वेद आते है, फिर क्रमेण वेदांग न्याय, मिमांसा, पुराण, स्मृति, गृह्यसूत्र आते है । मीमांसा दर्शन, छः दर्शनों में से एक है । कर्म एवं ज्ञान का जिसमे पूर्ण विवरण है, वैसे दो दर्शन है । **पूर्वमीमांसा** और वेदान्त को **उत्तरमीमांसा** भी कहा जाता है । पूर्ममीमांसामें धर्मका विचार है और उत्तरमीमांसा में ब्रह्म का । पक्ष-प्रतिपक्ष को लेकर वेदवाक्यों के निर्णीत अर्थ के विचार का नाम मीमांसा है। उक्त विचार पूर्व परंपरा से चला आया है । आजसे प्राय: पाँच हजार तीनसौ वर्ष पूर्व, सामवेद के आचार्य कृष्णद्वैपायन के शिष्य ने उसे सूत्रबद्ध किया । **पुराणो पञ्चमो वेदः** पुराणों को पंचम वेद माना हैं । अथर्ववेद के अनुसार **ऋच: सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह** ११.७.२) अर्थात् पुराणों का आविर्भाव ऋक्, साम, यजुस् औद छन्द के साथ ही हुआ माना जाता है । **शतपथ** ब्राह्मणमें (१४.३.३.१३) तो **पुराणवाग्ङ्मय**को वेद ही कहा गया है, क्योंकि, वेदविज्ञानको अतिसरल रूपकोंमें पुराणोंमें प्रस्तुत किया गया है । बृहदारण्यकोपनिषद् तथा महाभारत में कहा गया है कि, **इतिहास पुराणाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्** अर्थात् वेदका अर्थविस्तार पुराणके द्वारा करना चाहिये । अब वेदांग में **छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।।** मनु- **यज्ञाध्ययनसंक्रान्तिश्राद्धषोडशकर्मणाम् । प्रयोजनं च विज्ञेयं तत्तत्कालविनिर्णयम् । वेदाः प्रणाणं स्मृत्योपराणि तर्कादि शास्त्राणितथा इतिहासाः । सत्याभिधं ज्योतिषशास्त्रमेतज्ज्ञानं समस्तानि समाश्रयन्ति । वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् । कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्यचेह च ।।** वशिष्ठ **- क्रतुक्रियार्थं श्रुतयःप्रवृत्ताः कालाश्रयास्ते क्रतवो निरूक्ताः । शास्त्रादमुष्मात्किलकालबोधो, वेदाङ्गतामुख्यतरा प्रसिद्धा । छन्दःपादौ शब्दशास्त्रं च वक्त्रं कल्पःपाणी ज्योतिषं चक्षुषी च । शिक्षाघ्राणं श्रोत्रमुक्तं निरूक्तं वेदस्याङ्गान्याहुरेतनाषट्च । सर्वधर्ममयो मनु:- वेदार्थोपनिबद्धत्त्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतेः, यद् वै किञ्च मनुरवदत् तद् भेषजम् (तैत्तिरीय सं०२/२/१०/२), मनुं वैं यत् किञ्चावदत् तत् भेषज्यायै (ताण्ड्य-महाब्रा०२३/१६/१७)** उपरोक्त सभी धर्मशास्त्र में आते है, ऐसा सर्वस्विकृत पक्ष है । स्मृतियोंमें मनुस्मृति सर्वग्राह्य है । वाल्मिकी रामायण विश्वका प्रथम महाकाव्य एवं इतिहास माना जाता है । रघुवंश एवं राम चरित मानस का मूलाधार वाल्मिकी रामायण माना जाता है और मानस पूर्ण शास्त्र संगत होने के उपरान्त भी, शास्त्रार्थ ग्रंथ में उसकी गणना नहीं होती, यद्यपि कुछ प्रमाण मानस से भी लेंगे, क्योंकि, धर्मशास्त्र की भाषा संस्कृत है, कई वक्ता संस्कृत नहीं जानते है । शास्त्रार्थ ग्रंथोमें गृह्यसूत्रों, आगमग्रंथ सहित

धर्मसिंधु, निर्णयसिंधु, संस्कारभास्कर, वीरमित्रोदय, गौरवविलासादि ग्रंथो की भी गणना भी होती है।

भागवते - **स्थावरंविंशतिलक्ष, जलजंनवलक्षकं, कौर्मं च रूद्रलक्षस्यात्, दशलक्षं च पक्षीणाम् ।। त्रिंशल्लक्षं पशूनां च चतुर्लक्षं च वानरम् । ततो मनुष्यता प्राप्तिस्ततः कर्माणि साधयेत् ।। नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पंगुरूकर्णधारम् । मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान्भावाब्धिं न तरेत्सात्महा ।। दुर्लभं त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम् ।मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुष संश्रयः ॥** श्रीमद्भादवतानुसार, २० लक्ष स्थावर (पर्वतादि), ९ लक्ष जलचर, ११ लक्ष कूर्मादि, १० लक्ष पक्षी, ३० लक्ष पशू, ४ लक्ष वानर, ८४ लक्ष योनि के पश्चात् मानव देह प्राप्त होता है। इसमें भी मनुष्यत्व, मुमुक्षत्व, और सत्पुरुषों का सहवास – ईश्वरानुग्रह करानेवाली ये तीन वस्तु मिलना, अति दुर्लभ है - विवेक चुडामणि। **मनुष्याः प्रतिपद्यन्ते स्वर्गं नरकमेव वा। नैवान्ये प्राणिनः केचित् सर्वं ते फलभोगिनः** - वि.ध.२.११३.४। अन्य योनियों में कर्मस्वातंत्र्य नहीं है, मात्र मानव में ही कर्मस्वातंत्र्य है, इस मानवजन्म में सत्कथा एवं सत्संग तथा तप,भक्ति व कर्म के माध्यम उर्ध्वगति सिद्ध हो सकती है। <u>कर्मकी जो नियत प्रणाली है, उसे कर्मकाण्ड कहते है</u>। अब उपरोक्त शास्त्राधार से ही, स्वेच्छाचारी वक्ताओं की, धर्मविरूद्ध चेष्टाओं का, खण्डन करेंगे। हम पूर्णनिष्ठा से कहते है, कि हमे, किसीसे व्यक्तिगत द्वेष नहीं है, हमारा उद्देश्य मात्र शास्त्रसेवा का ही है।

कर्मकाण्ड - सर्वप्रथम कर्मकाण्ड के पक्ष में लिखते है। कर्मकाण्ड पूर्णतया वेदसंमत है। **यजुष** शब्द का अर्थ है- यज्ञ। **यर्जुवेद को मूलतः कर्मकाण्ड का आधार ग्रन्थ माना है**। कर्मकाण्ड - भगवान् वेदनारायण के करकमल है। **कल्पो वेदविहितानां कर्मणमानुपूर्व्येण कल्पना शास्त्रम्** (ऋग्वेदप्रातिशाख्य की वर्गद्वयवृत्ति)। वेद प्रणीहितोपसना का विध-विधानका दर्शन कल्प में है। गौतमधर्मसूत्रेण स्पष्टं लिखितम् **- वेदो धर्ममूलम्, तद्विदां च स्मृतिशीले ।** आपस्तम्बानुसारमपि **धर्मस्य रक्षणेन मानवस्य भौतिकं पारलौकिकं च जीवनं रक्षितं भवति । धर्मविहीनं ततस्तं...आचारहीनस्य तु ब्राह्मणस्य वेदाःषडङ्गास्त्वखिलाः सयज्ञा**। मत्स्यपुराण - **<u>कर्मयोगं विनाज्ञानं कस्यचिन्नेह दृश्यते । श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममुपतिष्ठेत्प्रयत्नतः</u>**।। ऐसे कर्मकाण्ड के अनेक प्रमाण वेद, वेतान्त, स्मृति-पुराणादि मे हैं। इनका वैज्ञानिक एवं तार्कीक अभिगम गृह्यसूत्रोमें <u>विधिरूपेण</u> (कर्मकाण्ड) अंकित है। इनके रचनाकार भी वैदिककाल में ऋषिगण थे। **मनुस्मृति विरुद्धा या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ।। वेदार्थोपनिबद्धत्त्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतेः ।। तथाहि यद् वै किञ्चद् <u>मनुरवदत् तद् भेषजम्</u>** - तैत्तिरीय सं०२.२.१०.२। वाल्मिकी रामायण, बालकाण्ड में महाराज दशरथजी बोलते है **विधिहीनस्य यज्ञस्य कर्ता सद्य विनश्यति** विधि-विधान की उपेक्षा या त्यागकर, स्वच्छन्दतापूर्ण किए गए कार्य विनाशक होते है, इसलिए ही हमारे ऋषि परंपरा मे शास्त्रोक्त विधि-विधान की रचना हुई है। **न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम् । जोषयेत्सर्व कर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।। गीता**

३.२६ । जनसामान्य की बुद्धि को भ्रष्ट करके, शास्त्र विरूद्धाचरण में उन्हे प्रवृत्त नहीं करना चाहिए । आप इसके पीछे के वैज्ञानिक मर्म को न समझे तो, स्वबुद्धि से अयुक्तार्थ नही करना चाहिए । जनसामान्य को शास्त्र मर्यादा से धर्मकार्य में प्रवृत्त करना चाहिए । कर्मकाण्ड की विधियोंका विरोध करनेवाले पूर्णतया अधूरे एवं पाखण्डी है, यह विश्वासपूर्वक हम सिद्ध कर सकते है, आप किसी भी विधि की बात कोई शास्त्रवेत्ता से जान सकते है ।

ब्राह्मणों की उपेक्षा **ब्राह्मणत्वस्य हि रक्षणेन रक्षितः स्याद् वैकिको धर्मः** श्रीमद् भागवतादि अनेक पुराण एवं स्मृतियों में ब्राह्मणद्वेष को अति निष्कृष्ट माना है । भगवान रामजी ने कहा है **- विप्रप्रसादाद्धरणीधरोहं**, रामचरित मानस में भगवान राम भी कहते हैं-**विप्र वंश करि यह प्रभुताई , ते नर प्रान समान मम, जिनके द्विज पद प्रेम, पुण्य एक जगमें नहीं दूजा, मन-क्रम-वचन विप्रपद पूजा**,रामचरित के कर्ता श्रीतुलसीदासजी विद्वान ब्राह्मण थे और धर्मशास्त्र के ज्ञाता थे और इसलिए कोई शास्त्ररहित बात ही नहीं लिखी । श्रीकृष्ण भागवत के दशमस्कंध में कहते है, **नन्वस्य ब्राह्मणा राजन्...कृष्णस्यजगदात्मज**.. । प्रमाण तो श्रुति से प्रारम्भ करके स्मृति पुराणो पर्यन्त सहस्रों मिलेंगे । **बंदउँ प्रथम महीसुर चरना** रामचरितमानस । ब्राह्मण ग्रंथो को देखिए.. यहां कुछ श्रुति प्रमाण देते है **- अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः । यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्राह्मणं तमृषिं तं सुमेधाम् -** ऋग्वेद ४.३०.४**, गायत्र्या ब्राह्मणं निरवर्तयत् त्रिष्टुभा राजन्यं जगत्या वैश्यम् -** अथर्ववेद - ७.४३.९ । **योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनाम् । स्थाणुमन्येनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम् -** कठ.२.२.७ । कर्मानुसारेण जन्म प्रपद्यन्ते जीवाः - पुण्यकर्मभिः उत्तमं पापकर्मभिः नीचं जन्म, पुण्यपापमिश्रणात् मनुष्यजन्म च प्राप्यते । **तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशोह यते रमणीयां योनिमापद्योरन्ब्राह्मण योनिं वा क्षत्रिय योनिं वा वैश्ययोनिं वाथ ...** छांदो.उपनिषद ५.१०.७ । ये सब श्रुति प्रमाण समझने का सामर्थ्य, बहुश्रुत कथाकार या शिबिरोंवाले योगीके पास नहीं है । हमारा जन्म कौनसे कुल में होगा, कौन-सी योनि प्राप्त होगी, यह हमारे पूर्वजन्मकृत कर्मो के आधार पर ही निर्णित होता है, अगला जन्म इस जन्म के कर्माधीन है । **जीवः स्वकृत पुण्येन ब्रह्मवंश समुद्भवः -** गौडस्मृति । गीता में भगवान ने कहा है **शूचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोभिजायते** । अनेक शुभकर्म के संयोग से योगभ्रष्ट, उत्तम योनिमें जन्म लेता है । महाभारत में भी कहा है **- ब्राह्मण्यांब्राह्मणाज्जातो ब्राह्मणस्यान्न संशयः** ब्राह्मण एवं ब्राह्मणी के द्वारा उत्पन्न संतान ब्राह्मण ही है, उसमें कोई संशय नहीं । योग भी कहता है **सति मूले जात्यायुर्भोगाः** अनन्त जन्मोंके पुण्यार्जन से ब्राह्मणकुल में जन्म मिलता है । **तपः श्रुतञ्च योनिश्चेत्येतद् ब्राह्मणकारणम्** -महाभाष्य २/२/६ ।। यहां महाभाष्य एवं योग दोनों ने ही योनि-कुलको प्राधान्य दिया है । यथा ब्राह्मणोंकी उपेक्षा, वेद, स्मृति, पुराण एवं ऋषिवचनों की प्रत्यक्ष उपेक्षा ही है । वेदभाष्यों में इसका बहोत विवरण मिलता है । वर्णाश्रम में कुलकी महत्ता पर, प.पू. जगद्गुरू श्री निश्चलानंदजी, पुरी मठाधीश के अनेक विडियो एवं

शास्त्रमत उपलब्ध है, सेंकडो प्रमाण उपलब्ध है । इसी विषय पर मैंने (१) वर्णव्यवस्था (२) पुनर्जन्म नामक पूर्व दो लेख में विस्तृत चर्चा की है ।

कुछ लोग वर्णाश्रम की व्याख्या करते है **- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः** मे केवल, कर्म के आधार पर ही वर्ण नक्की होता है, कितने मूर्ख है ये वक्ता । भगवान ने **गुण** शब्द प्रथम लगाया है । एक व्यक्ति दिवसमें चार प्रकार के कर्म करता है, प्रातः संध्यावंदन, देवतार्चन, स्वाध्यायादि करता है तो प्रातःकाल में ब्राह्मण, अपने परिवार की सुरक्षा के लिए कर्म करता है, तब क्षत्रिय, जब नोकरी, सेवा या व्यापार करता है, तब वैश्य, एवं अपनी पत्नि को, या माता को गृहकार्य में मदद करता है, तब शूद्र - ये तो वर्णशंकरत्व है । स्त्रीयां, जो घर में बरतन साफ करती है, झाडू लगाती है, वे क्या शूद्र ही रहेगी, बहुधा स्त्रीयोंको, अपने गृहस्थ कार्यों के कारण एक ही वर्णमें रखोगे ? भगवानने **गुण** शब्द वैसे ही नहीं लगाया, कि छन्द बैठ जाए । आगे १८ अध्याय में फिर से कहा है - **कर्माणि प्रविभक्तानि,** अब कर्मो का विभाजन किस आधार से भगवान करते है - **गुण** के । तब गुण क्या है ? स्वभाव क्या है ? संस्कार क्या है ? गुण को प्रकट होने के लिए आश्रय की जरूरत पडती है, जैसे सुगंध को प्रकट होने के लिए पुष्प, चन्दनादि होना आवश्यक है । गुण कैसे आश्रय पाते है, यह सब स्पष्टरूप से जाने बिना किया अर्थ अधूरा है । निश्चितरूप से धर्मशास्त्र की उपेक्षा करनेवाले यह नहीं समझ पाएंगे । मनुस्मृति में भी द्विजातीयों में उपनयन काल भिन्न-भिन्न है, इसका अर्थ वर्ण जन्म से ही पूर्व निश्चित होना चाहिए, क्योंकि जन्म के पूर्व जातक कोई कर्म इस संसार में करता ही नहीं । इसका वर्ण कौन होगा? वेदव्यासजी भी जाति प्राधान्य की बात करते हुए, अनुलाम-विलोमादि की बात श्रीमद्भागवत में करते है, जिसमें माता-पिता की कुल-जाति ही प्रधान होती है । **दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः** गीता १.४३ । इस श्लोकमें भगवानने जातिप्राधान्य एवं वर्णशंकरत्व की बात कहीं है, प्रायः यह रामदेवबाबा की समझ के बहार होगा । ये महानुभाव को बहोत सस्ती प्रतिष्ठा, राजनैतिकबल से प्राप्त हो गई है, वे धर्मशास्त्र में कुछ नहीं जानते, ऐसा प्रतीत होता है । आगे देखिए, मनु महाराज कहते है **दुःशीलोपि द्विजः पुज्यो, न तु शूद्रो जितेन्द्रिय** । यही बात रा.मा. में भी है **पूजिय** विप्र **सील गुन** हीना । **सूद्र न गुनगन (सकल) ग्यान प्रवीना ।।** वाचकवर्ग, कृपया इन प्रमाणों के आधार पर ही सही वक्ताओ के ज्ञान की सीमाका मूल्यांकर करें ।

<u>बाबा रामदेव द्वारा ज्योतिष, ब्राह्मण आदि का विरोध करना भी अत्याधम कार्य है</u> । एकदम जूठ पर आधारित उनकी टीवी सिरियल तो तत्काल बंद करनी पडी । उनकी तो भाषा भी शिष्ट नहीं है, बोलते है कि, **ब्राह्मणको मथ्था मारना**, लिंबु-मीरची बांधना, शनी पर तेल नहीं चडानना (इसके पीछे का तर्क-विज्ञान आप समर्थ की शरणागति से पा सकते है), इटली में

कोई तेल नहीं चडाता, तो उनको क्यों कुछ नहीं होता इत्यादि । आपकी दवाईयां नहीं लेनेवाले लोग भी स्वस्थ है, आपसे पहले हजारों वर्षो से भारत में योगायुर्वेद की परम्परा चल रही है । आप जब योग शिबिर करते है तो, प्रत्येक साधक के प्राणायाम की व्यक्तिगत समिक्षा करते है ? क्योंकि बहोत से साधक ठीक से प्राणायाम नहीं करते होंगे । **प्राणायामेन युक्तेन सर्वरोगक्षयो भवेत् । अयुक्ताभ्यासयोगेन सर्वरोगसमुद्भवः।। हिक्का श्वासश्च कासश्च शिरः कर्णाभिवेदनाः। भवन्ति विविधा रोगाः प्राणायाम व्यतिक्रमात् ।। अतः शास्त्रोक्त मार्गेण प्राणायामं समभ्यसेत्** । अनुचित योग या प्राणायाम पतनकारक बनता है, इससे श्वास, कफ, शिर्षदर्द, कानमें दुखना, फेंफडे खराब होना इत्यादि, योग एवं आयुर्वेद की बात जनसामान्य में कही है या नहीं । ब्राह्मण को मथ्था मारना बोलने से पहले ज्ञात होना चाहिए कि **<u>ऊरू का अर्थ जंघा होता है, पेट नहीं</u>,** दूसरी बात **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्** ब्राह्मण भगवान का मुखारविंद ही (आसीत्) है, मुख से उत्पन्न नहीं हुआ । यथा कहा जाता है कि **ब्राह्मणा यानि भाषन्ते मन्यते तानि देवता ।** हां, ये बात पूर्ण ब्राह्मणों के लिए ही है, **रतिर्विप्रस्य सूत्रत्वे** वाले केवल जनोईधारी ब्राह्मणो के लिए नहीं है । वैसे तो, आज साधु भी कहां साधु रहे है, व्यापारि ही बन गए है । बडी-बडी फेक्टरीयों के मालिक है, मिडिया की हर चेनल पर, अपनी प्रोडक्ट का टर्नओवर बढाने कि लिए मोडलिंग करते है । इनके पास तपोबल कहां है, तप करनेका समय ही नहीं है, वे तो शिबिरो, सभाओं, कथाओं में व्यस्त है । बीना एसी कार बहार नहीं निकलते ।

अनधिकृत मंत्रदीक्षा - हर किसीको व्यासपीठ से त्र्यम्बकम्, यातेरूद्र, गायत्री मंत्रादि नहीं रटा सकते । हरिनाम का संकीर्तन अवश्य करे । **क्रियाकरणहीनत्वात्कथं तेषां हि कर्तृता** जो मंत्र रटाते हो, उसके विषय में सुस्पष्ट होना आवश्यक हैं, **पुरूश्चरणहीनोपि तथा मन्त्रो न सिद्धिदः** उसका पुरूश्चरण स्वयं को पहले करना पडता है । **नानुष्ठानंविनावेद वेदनं पर्यस्यति ब्रह्म धीस्तवतैवस्यात्फलदेति परामाता** अनु.प्रकाश, श्रीविद्यारण्यस्वामि ने इसपर विशेष बात कही हैं, जो वेदमंत्र की आप दीक्षा देते हो, उसके लिए स्वयं दीक्षित हो और उसका अनुष्ठान करों । **व्रतेनदीक्षा**..यजुर्वेद । **अदीक्षिता ये कुर्वन्ति जपयज्ञ क्रमयादिका, न्यूनं निष्पलां यान्ति..** बीना दीक्षाके मंत्र विफल होते है, व्यर्थ परिश्रम है । मंत्र गुरूद्वारा प्राप्त होना आवश्यक है, वशिष्ठजी कहते है **गुरूम्बीना वृथोमंत्रः**। मंत्र के लिए, दिक्षा, गुरू, पुरश्चरण विधि, माला, जपसंख्या, विनियोगादिका विचार प्राथमिक है । बिना मंत्र के दिक्षा का उपदेश व्यर्थ है, क्योंकि **अथ शास्त्रीयं विधानं च शिक्षणीयम् ।जपो देवार्चन-विधिः, कार्यो दीक्षान्वितैर्नरैः** मन्त्र मुक्तावली, अतः सभी कार्य दीक्षा के उपरान्त ही उचित है । दीक्षा कौन दे सकता है - **श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्** (मु.उप) केवल सद्गुरू और शक्तिपात भी **शक्तिपातानुसारेण शिष्योनुग्रह मर्हति** (शि.पु) योग्यताके आधारपर ही गुरू द्वारा होता है । **अनुग्रह प्रकारस्य क्रमोयमविवक्षतः** शि.पु.वा.सं.३.४। **आर्षच्छन्दश्चदैवत्यं विनियोगस्तथैव च । वेदितव्यः प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशेषतः -** व्यास. । **अविदित्वा ऋषिच्छन्दो देवतं योगमेव च । योध्यापयेद्याजयेद्वा**

पापीयान् जायते तु सः - याज्ञ. **इदं प्रधानं शेषोऽयं विनियोगक्रमस्त्वयम्** - वाक्यपदीय । **ऋषिच्छन्दो देवतं योगमेव च । योध्यापयेद्याजयेद्वा पापीयान् जायते तु सः** - याज्ञ. । **त्वमेव परमेशानि अस्याधिष्ठातृदेवता ।चतुर्वर्ग फलावात्यै विनियोगःप्रकीर्तितः** - ५.१४८ । **करणेषु तु संस्कारमारभन्ते पुनः पुनः । विनियोग विशेषांश्च प्रधानस्य प्रसिद्धये** ३,७.९२ ॥ **इदं प्रधानं शेषोऽयं विनियोगक्रमस्त्वयम्** - वाक्यपदीय । **ऋषिच्छन्दो देवतानां विन्यासेन विना,जप्यते साधितोऽयेष तुच्छ फलं भवेत् ।। न्यासंविनाजपं प्राहुरासुरं विफलंबुधाः । न्यासात्तदात्मको भूत्वा, देवोभूत्वा तु तंयजेत् ।। अकृत्वा विधिवन्न्यासान्नाचार्यामधिकारवान् । चैतन्यं सर्वभूतानां शब्दब्रह्मेति मे मतिः ।। ऋषिच्छन्दो देवतानां विन्यासेन विनाजप्यते साधितोऽयेष तुच्छ फलं भवेत् ।। जप संख्या तु कर्तव्या ना संख्यातं जपेत्सुधीः। न संख्याकारकस्यास्य सर्वंभवति निष्फलम्** ॥ अर्थात्, अंगिरा ऋषि के अनुसार**, असंख्या तु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्** - तंत्र । अर्थात् मंत्र के ऋषि, माला-जपसंख्या, विनियोग, अनुष्ठान विधि, ऋषि, छन्द, देवता, उच्चारण प्रणाली इत्यादि, जो मंत्र देता है या रटाता है, उसको मालूम होना अत्यावश्यक होता है । मंत्र रटानेवालोने, क्या उक्त मंत्रानुष्ठान किया है, दीक्षा का अधिकारी है, मंत्र की अनुष्ठान प्रणाली, मंत्र के देवता, छन्द, ऋषि, कीलक, न्यास, विनियोगादि का ज्ञान है या नहीं ? उपरोक्त सभी शास्त्रप्रमाण संकेत देते है कि, यदी नहीं तो मंत्र का फल तो नही मिलता किन्तु हानी अवश्य हो सकती है । **विनियोग क्या है ?** जैसे दवाकी बोटलपर, दवाका नाम, बेच नं, एक्षपायरी डेट, डोझ, प्रयोग की पद्धति, कन्टेन्टादि लिखे रहते है, अब बीना लेबल की दवा, कोई डॉक्टर किसी दरदी को दे सकते है या एक ही दवा सभी दर्दीयों को दे सकते हैं? मंत्र भी औषधि है जो, मन, आत्मा को पुष्ट करती है इसके बहोत प्रमाण आगम ग्रंथो में उपलब्ध है या **मंत्रशक्ति एवं उपासना रहस्य** पुस्तकमे मैंन सविस्तर लिखा है । मंत्र, असर क्यों नही करते या विपरित फल क्यो देते है, इसका अंदाजा इससे आयेगा । क्या, ये मंत्रौषधी बीना परिक्षण हर किसीको दे सकते है? फिर मंत्रौषधि क्यों? औषध से लाभ ही होगा, यह जरूरी नहीं, अनधिकृत या अनावश्यक औषध विष समान होती है ।

कोई-कोई कथाकार को उपरोक्त बाते आवश्यक नहीं लगती और प्रमाण देते है - **उल्टा नाम जपे जग जाना । वाल्मीक भये ब्रह्म समाना** ।। इसका अर्थ करते है कि, कोई भी मन्त्र, कैसे भी जपो अच्छा ही है, कोई समस्या नहीं, शास्त्रोक्त विधि विधान की कोई आवश्यकता ही नहीं । जब ऐसा ही था, तो ऋषियों का इतना प्रयत्न व्यर्थ ही माना जाएगा । यह मन्त्रशास्त्र का आविष्कार निरर्थक ही हो गया क्या? प्रायः यजन में उपयुक्त मन्त्रों, जिस देवता या उपचार के लिए प्रयुक्त होता है, इसे ऋषियों ने तर्कयुक्त संगत किया है । मन्त्रोंकी शक्तियोंको ध्यानमें रखकर ऋषियोंने, उसे नियतस्थान पर, प्रयुक्त किरनेका निर्णय किया है - **यज्ञादौ कर्मण्यनेन मन्त्रेणेदं कर्म तत्त्कर्तव्यमित्येवं रूपेण यो मन्त्रान्करोति व्यवस्थापयति स मन्त्रकृत्** - यज्ञादि कर्मो मे किस मन्त्रसे, कौनसे कर्म करना चाहिए, ऐसी व्यवस्था आर्षदृष्टा ऋषियोंने की है । इसकी संगति मुण्डकोपनिषद में भी मिलती हैं - **तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु करमाणि कवयो**

यान्यपश्यंस्तानि त्रेतायां बहुधा सन्ततानि । तान्यचरथ नियतं सत्यकामा एषःवःपन्थाः सुकृतस्य लोके ।। क्रान्तदर्शी ऋषियोंने जिस कर्मोका, जिस मन्त्रोंमें साक्षात्कार किया था, वही सत्य है । यहां त्रेतायां का अर्थ उपरोक्त तीन प्रकारकी ऋचा-मंत्रो को कवयः मन्त्रेषु यानि कर्माणि अपश्यन् अतः मन्त्रोकी सार्थकता जहां उचित लगी वहां प्रयुक्त करनेका आदेश दिया । भक्तिकी बात नहीं है, भजन-संकीर्तन, तो मात्र हरिनाम या रामनामसे कर सकते है, वे सिद्धमंत्र ही है, यद्यपि, गायत्रीमंत्र, जातेरूद्र, त्र्यंबकम् इत्यादि आप वैसे ही, बीना अधिकार हर किसीको, नहीं किसी को दे सकते या पीठ-मंच से नही रटा सकते ।

उपासना या यजन में कौन से मन्त्र, कब और कैसे प्रयुक्त करना है, इसका पूरा विधिविधान कर्मकाण्डमें है, मन्त्रों का विशेष प्रयोग, तो शिवपुराण, अग्नि पुराणादि में भी बताए है । किस देवताको कौनसे मन्त्रसे (लिंगमन्त्र) अर्चनादि होगा, जैसे कि, **आकृष्णेनइमंदेवा अग्निमूर्धा दिवःककुत् । उद्बुध्यस्वेति च ऋचो यथासंख्यं प्रकीर्तिता । बृहस्पतेऽयतिअदर्यस्तथै वान्नात्परिस्रुतः, शन्नोदेवीस्तथा काण्डात्केतुं कृण्वन्निमास्तथा ।।** याज्ञ. १ । ३००-३०१ ।। **यज्ञादौ कर्मण्यनेन मन्त्रेणेदं कर्म तत्कर्तव्यमित्येवं रूपेण यो मन्त्रान्करोति व्यवस्थापयति -** मन्त्रों की शक्ति के संदर्भ में, यज्ञादि कर्मोमें कौनसे मन्त्रसे कौनसा कर्म को करना चाहिए, ऐसी जो व्यवस्था ऋषियोने की है, यथा वे उन मन्त्रों के दृष्टा बने । कर्मके प्रकार-विधि-फलादि कर्मकाण्डान्तर्गत है ।

इसका पूरा वैज्ञानिक अभिगम के लिए हाल ही में मैने एक पुस्तक प्रकाशित की है **- मंत्रशक्ति एवं उपासना रहस्य** जिसमें प्रचुरमात्रा में प्रमाण उपलब्ध है और प.पू.जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानन्दजी (बदरि-शारदा, उभयपीठाधिश), पु. जगद्गुरू श्री श्रीवद्याभिनव श्री कृष्णानन्दतीर्थजी, श्री डह्याभाई शास्त्री(नडीयाद), श्री मधुसुदन शास्त्री(कर्णाटक), डॉ. मनीषा गजरे इत्यादि विद्वानों के अभिप्राय भी है । उसका युआरएल इस लेख के अंतमें दिया है, जो आप पढ सकते है, पुस्तक भी मंगवा सकते है । इसके पूर्व भी, एक **धर्मशास्त्र पर आक्रमण** नामक लेखमें विधि, निषेध, बलि इत्यादि विषयों पर सतर्क वैज्ञानिक अभिगम प्रस्तुत किए थे(अंदाजेसे २००४ में)। हमारे अन्य पुस्तकोंमें, पु.श्री कृष्णशंकर शास्त्रीजी (शोलाविद्यापीठ), प.पू. जगद्गुरू शंकराचार्य श्री जयेन्द्रतीर्थजी महाराज(कांची) तथा अनेक विद्वज्जनों के मंतव्य-आशिष संलग्न किया था ।

ज्योतिष की उपेक्षा - अब बात करेंगे ज्योतिष, वास्तु एवं श्राद्ध के प्रमाणों की । सर्व प्रथम हम ज्योतिष की बात करेंगे । श्री रामदेवजी एवं श्री मोरारिबापु कहते है कि, हम ज्योतिष, वास्तु को नहीं मानते और यह हमारा अंगत मत है । यदि आपका अंगत मत है तो, कृपया आप तक ही उसे सिमीत रखें । क्या आप अपनी सभी अंगत बाते जनसामान्य को बताते है ? यदि आप किसी ज्योतिषी या वास्तुशास्त्री के बारे में बोलते तो, कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि

आपको किसीका खराब अनुभव हो सकता है । आप पूरे शास्त्रकी उपेक्षा करते है, वह अक्षम्य है । आप जो नहीं करते हैं या जो नही मानते वो सिद्धान्त नहीं या सिद्ध नहीं बन सकता, ये तो आपका उस विषयका अज्ञान है । आप तो रोजा भी नहीं रखते होंगे, नमाज भी नहीं पढते होंगे, अठ्ठईतप भी नहीं करते होंगे, चर्च में रविवारको जाकर प्रेयर भी नहीं करते होंगे, इसका, कतई ये अर्थ नहीं होता कि, आप जो नहीं मानते वह असत्य है । अब हम आपको कुछ शास्त्रमत बताते हैं, कृपया ऐसा नहीं बोलना कि श्रुति, ब्राह्मणग्रंथ, गृह्यसूत्र, स्मृति, पुराण, रामायण या महाभारत जैसे इतिहास भी गलत हैं, क्योंकि यहीं शास्त्राधार है । **ज्योतिषामयनं चक्षु**र्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । ज्योतिष भगवान वेदनारायण के नेत्र है - वेदांग है ।

वैसे तो अनगिनत प्रमाण है, यद्यपि, सर्वप्रथम हम श्रुति से प्रारम्भ करके पुराणों पर्यन्त के कुछ प्रमाण आपको देंगे । वेदांगज्योतिष कालविज्ञापक शास्त्र है । माना जाता है कि, ठीक तिथि नक्षत्रपर किये गये यज्ञादि कार्य फल देते हैं । कहा गया है कि **वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्येतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥** (आर्चज्यौतिषम् ३६, याजुषज्योतिषम् ३)। चारो वेदों मे, पृथक्-पृथक् ज्योतिषशास्त्र थे । (१) ऋग्वेद का ज्यौतिष शास्त्र - **आर्चज्योतिषम्** : इसमें ३६ पद्य हैं (२) यजुर्वेद का ज्यौतिषशास्त्र, **याजुषज्योतिषम्** इसमें ४४ पद्य हैं (३) अथर्ववेद ज्यौतिषशास्त्र - **आथर्वणज्योतिषम्** इसमें १६२ पद्य हैं। इनमें ऋक् और यजुः ज्योतिषोंके प्रणेता लगध नामक आचार्य हैं, ग्रहलाघव नामक ग्रंथ से ग्रहोकी गति-उदयास्त, ग्रहण-वेधादि का ज्ञान होता है, जिसका रचना काल १५०० से २००० ई.स. पूर्वका माना जाता हैं । अर्वाचीन भौतिकविज्ञान या दूरबीन का जन्म नहीं हुआ था । यजुर्वेदके ज्योतिष के चार संस्कृत भाष्य तथा व्याख्या भी प्राप्त होते हैं । ज्योतिषशास्त्र के तीन स्कन्ध माने गए- **सिद्धान्त, संहिता और होरा । पञ्चाङ्गस्यफलं श्रुत्वा गङ्गास्नान फलं लभेत् ।।तिथिर्वारो तथा विष्णु, नक्षत्रं विष्णुमेव च । योगश्च करणश्चैव सर्वं विष्णुमयं जगत् ।। तिथिवारं च नक्षत्रं योग: करणमेव च । यत्रैतत्पञ्चकं स्पष्टं पञ्चांङ्गं तन्निगद्यते।। जानातिकाले पञ्चाङ्गंतस्यपापं न विद्यते । तिथेस्तुश्रियमाप्नोति वारादायुष्य वर्धनम् ।। नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोग निवारणम् । करणात्कार्यसिद्धि: स्यात्पञ्चाङ्ग फल मुच्यते ।। मासपक्षतिथीनाञ्च निमित्तानांचसर्वशः । उल्लेखनमकुर्वाणो न तस्यफलभाग्भवेत् ।।** तिथि, वार, करण, मास, योग सब परमात्मा के स्वरूप ही है और उनके श्रवणमात्र से गंगास्नान का फल मिलता है । ये सब प्रमाण सिद्ध करते है कि वेदांग है, उसकी उत्पत्ति वेद से ही है । बहोत सारी ऋचाए वेदमें उपलब्ध प्राप्य है । हजारो वर्षो से, जब एस्ट्रोनोमिका इतना विकास नहीं था, तबसे, हमारा ज्योतिषाधारित पञ्चांग हमें ग्रहो की गतिविधिया, उदयास्त, वक्रातिचारादि प्रमाणिक रूपसे बताते है ।

हमने तो, पूरे ब्रह्माण्डको परमात्माका एक परिवार माना है, हमने दिव्य ग्रहों से संबंध बनाया है, जैसे कि, सूरजदादा, धरतीमाता, चांदामामा इत्यादि । ग्रहों की दिव्य चेतना पूरे संसारको प्रभावित करती है इसमें कोई संदेह नहीं है, अपितु, जिसकी प्रज्ञा, ये समझनेकी क्षमता न रखती हो, उसे शास्त्र क्या कर सकते है **यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रस्तं किं करिष्यति** । सभी पुराणों में ज्योतिष के अध्याय है । प्रमुखतया श्रीमद्भागवत, शिवपुराण, भविष्यपुराण, अग्निपुराण, पद्मपुराण एवं अनेक स्मृतियों में एवं अनेक ऋषियोंके स्वतंत्र ग्रंथ भी है, जिसमें भृगु, वशिष्ट, वहाहमिहीर, अत्रि, परशुरामजी काअनुपम योगदान है । सभी ऐसे वक्ताओ से प्रार्थना है कि, कृपया ये मत कहना कि, पुराण, वेद, स्मृतिया गलत है । अब एक पूर्ण शास्त्राधारित तर्क बताते है, पूरे ब्रह्माण्ड की रचना पंचमहाभूतों से मानी है, पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं आकाश । जब हम तेज की बात करते है तब सभी ग्रहों के रश्मिबल हम तक पहूंचते है । ग्रहों की चाल के कारण ही, ग्रहण, भूचाल, ऋतुए होती है । हर समय यह रश्मिबल एक-सा नहीं होता, यथा प्रत्येक जातक में उसकी भिन्न-भिन्न असर पडकी है । जीवमात्र, वनस्पति से लेकर प्राणीमात्र, उसकी असर से प्रभावित रहते है । एक ही सूर्य की किरण से क्लोरोफिल, अल्ट्रावायोलेटादि सात शक्तियां स्वीकारी है । अन्य ग्रहोकी भी ऐसी ही असर होती है । हम आपको सेंकडो प्रमाण दे सकते है, आपके व्यक्तिगत अभिप्राय को स्वयं तक मर्यादित रखें और आपका जो, विषय ही नहीं, इसमें छेडछानी न करके, जनसामान्य को भ्रमित न करें ।

एक अति सरल बात करते है, आज से २००-३०० वर्ष पूर्व, ग्रहो की गति, उदयास्त, मार्गी, वक्री, अतिचारी, वेधादि कैसे जानते थे? यही तो विश्वका सर्व प्रथम विज्ञान है, जिसका, विश्व के माने हुए विज्ञानी ज्योतिषके, वैज्ञानिक आधारों की सराहना करते है, इस आविष्कार को अनुसंधान का विषय बताते है, तब हमारे यहां कुछ महामूर्ख, इसकी उपेक्षा करते हैं । अच्छे वक्ता बननेका अर्थ यह कदापि नहीं होताकि, हम पूर्ण है । हर छोटी-छोटी क्रियाओं में विज्ञान है । मर्यादित मेधाशक्तिमें, जो सत्य समझ में न आए, उसे अंधश्रद्धा है ऐसा कहने से पूर्व, समर्थ विद्वानोकी शरणमें, गुरूपसदन करना चाहिए । ज्योतिषीकी उपेक्षा सहनीय है, किन्तु ज्योतिषशास्त्र को हम नहीं मानते, ऐसा कहनेवाले पूर्णरूप से अज्ञानी एवं पाखण्डी है, ये भृगु, पराशर, परशुराम, वशिष्टका क् अनुपम प्रयास के प्रति अक्षम्य अपमान है ।

वास्तु की उपेक्षा - अब बात करेंगे वास्तु की । वैसे वास्तुमें, मेरा पूरा अभ्यास नहीं है, यद्यपि उक्त बहुश्रुत वक्ताओं जितना खाली भी नहीं हुं । वास्तु वेदकालीन है एवं उसकी उत्पत्ति भी वेदोंसे ही मानी गई है । वैदिकग्रथोंमें ऋग्वेद ऐसा प्रथम ग्रंथ है, जिसमें धार्मिक व आवासीय वास्तुकी रचना का वर्णन मिलता है। यद्यपि पूर्व वैदिक काल में वास्तु का उपयोग विशेष रूप से यज्ञ वेदियों की रचना व यज्ञशाला के निर्माण आदि में होता रहा है, किन्तु धीरे-धीरे इसका उपयोग देव प्रतिमाओं व देवालयोंके निर्माण व भवन निर्माण में होने लगा । अथर्ववेदका

उपवेद स्थापत्य ही आगे चलकर वास्तु या शिल्प शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ । वास्तु के, यजुर्वेद में लगभग ४५ मंत्र एवं अथर्ववेद में १६५ से ज्यादा मंत्र है । प्राचीन वास्तुग्रन्थ **स्थापत्यवेद** भी अथर्ववेद से लिया गया है जिसमें, वास्तु से सम्बंधित ज्ञान संकलित हैं ।

वास्तुके लिए प्राचीन ग्रंथोंमे विश्वकर्मीयशिल्प, कश्यपशिल्प, शिल्प-संग्रह, मयमत, मानसार, सनत्कुमार-वास्तु, चित्रलक्षण, अगत्स्यसकलाधिकार, शिल्परत्न, समरांगण सूत्रधार, सूत्रधार मण्डन, वास्तु प्रदीप, वास्तु रत्नावली,पुराणों मे मत्स्य, अग्नि, भविष्य, किरणतन्त्र, बृहत्संहिता, हयशीर्ष-पंटरात्र, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, हेमाद्रा, विश्वकर्माप्रकाश इत्यादि है । पुराणों मे वास्तु उत्पत्ति एवं वर्णन कई स्थान पर है । वास्तु में सविशेष मैं नहीं, लिखते, यद्यपि उपरोक्त दोनों वक्ता के मत को पूर्णतया अशास्त्रीय सिद्ध कर सकते है ।

श्राद्ध एवं और्ध्वदैहिक (अन्त्येष्ठादि) कर्मो की उपेक्षा - हम श्राद्ध नहीं करते, हमारे समाज में अन्त्येष्टी नहीं होती । अन्त्येष्टी मात्र सन्यासीयों कि ही नहीं होती, उनकी समाधि होती है । जिसने रामायण, महाभारत या पुराण पढे होंगे उनको तो पता ही होगा कि, महाराज दशरथ ने श्राद्ध किया है, भगवान परशुराम ने सिद्धपुर में मातृवध के दोष मुक्ति हेतु मातृश्राद्ध किया है । माता सीताजीने दशरथजीका श्राद्ध किया है । वायुपुराण में भगवान श्रीकृष्ण का गरूडजी के साथ इस विषय में उत्तम संवाद है । श्रीराम ने, बाली, जटायु एवं रावण आदि की अन्त्येष्टि करवाई है । वाल्मिकी रामायण में रामने वनवास दरम्यान श्राद्ध, होम, तर्पणादि नित्यकर्म किये है । तुलसीदासजी के रामचरित मानस में, भरतजीने, पिता दशरथके दशगात्र विधान का उल्लेख मिलता है - **भरत कीन्हि दशगात्र विधाना** । इसको **अवयव श्राद्ध** बोलते है, जो अन्त्येष्ठी के बाद, दश दिवस पर्यन्त चलता है । इसके बाद ही नारायणबली (एकादशाह) और सपिण्डीकरण का अधिकार मिलता है । श्राद्ध के लिए वैदिक मंत्र है, पितृओं के, विश्वेदेवाओं के लिए, सपिंडीकरणके लिए, गृह्यसूत्रों से लेकर पुराणों मे, तथा स्मृतियों से लेकर रामायण-महाभारत जैसे इतिहास में अनेक स्थान पर इसकी चर्चा ही नहीं, इनके स्वतंत्र अध्याय है । ये बहुश्रुतोंके अभ्यासमें प्रायः आया नहीं होगा । क्या इन सभी, पुराण, मंत्र, गृह्यसूत्र, रामायण-महाभारतमें गलत लिखा है ऐसा कहने का सामर्थ्य है किसीमें ?

अन्त्येष्टि:प्रस्थितस्येहलोकात्सम्बन्धिनो जनस्य च । अन्त्येष्टिं कुर्वतेऽत्रैष्टुं मङ्गलं पारलौकिकम् ।। तैत्तिरीयसंहिता - **जायमानो वै ब्रह्मणस्तिभिऋणवान्जायते ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो यज्ञेन देवेभ्यःप्रजयापितृभ्यः। एष वा अनृणो यःपुत्रो यज्वा ब्रह्मचारी वासी** (वैदिककाले श्राद्धादिन्त्यक्त्वा, पुत्रः ऋणच्युतः इत्यभिधीयते) । मनु - **ऋणानित्रीण्यपाकृत्य मनोमोक्षे निवेशयेत् । अनापृत्यमोक्षं तु सेवमानोव्रजत्यधः**-मनु.२.१६।। **निषेकादि श्मशानान्तो मन्त्रैर्यसोदितोविधिः**। ऐसे सेंकडो प्रमाण श्रीमद्भागवत, रामायण, गृह्यसूत्र, स्मृतियां एवं

पुराणोंमें है। वेदो में अन्त्येष्टि, श्राद्धादिकके लिए हमारे ऋषियोंने अनेक मंत्र व विधान बताए है। यह पूरा विज्ञान इस संक्षिप्त लेख में नहीं समझा सकते।

हाल ही में प्रभात खबर, मुजफरपुर दैनिक में, १८.६.२०१९ को पृष्ठ १८ पर एक माहिती प्रसिद्ध हुई है, जिसमें जापान की एक महिला **मुशिगा तोमोगो ने ३१.मई २०१९ को श्राद्धविज्ञान पर टोक्यो युनिवर्सिटी से पीएचडी किया है। इस महिला ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, महाभारत, रामायण, पद्मपुराण, गरूडपुराण, श्राद्धकौमुदी सहित अनेक पुरातत्त्व ग्रंथो का अध्ययन किया, भारत के श्राद्ध तीर्थो में भ्रमण किया और साबित किया कि भारतीय श्राद्ध पद्धति पूर्णतया वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत है। इतना ही नहीं कई आन्तराष्ट्रीय मेगेझिनों मे उसके शोधपत्र को सन्माननीय स्थान प्राप्त हुआ है**। ऐसे कई पाश्चात्योंका और्ध्वदैहिक विज्ञान पर संशोधन एवं मत मेरे पास संकलित है, लेकिन दुःख इस बातका है कि, रामदेव बाबा एवं मोरारिबापु जैसे स्वयं को धर्माध्यक्ष माननेवाले ही उसकी उपेक्षा करते है, ऐसे गहन विषयपर चिन्तन न करते हुए, हल्की प्रतिष्ठा के लिए वाक्व्यभिचार करते है। आपने केवल रामायण या महाभारत ही ठीक से पढा होता तो, आप ये समझ पाते। हम इस जापानी विदुषीके प्रयासको वंदन करते है। यदि आपके पास, इस विज्ञान को समझने की बुद्धिक्षमता न हो तो, विद्वानोके प्रति गुरूपसदन करते, तो अच्छा होता (विद्वानों को गुरू मानने से आप छोटे नहीं होंगे)। ऐसे शास्त्रविरोधी निवेदन करके आपकी अल्पज्ञता का प्रदर्शन मत करों। प्रतीत होता है कि, अंग्रेजोवाली गुलामी आज भी ऐसे लोगों के मानसपट पर जीवित है।

उपरोक्त प्रमाणोंसे फलित होता है कि, मनुष्य जन्ममें सर्वप्रथम कर्तव्य श्राद्धा एवं नित्यकर्म का है। द्वितीय देवपूजा, फिर यज्ञादि और अंतमें कथा श्रवण। गृहस्थीके लिए - **देवपूजा, यज्ञादि या कथा श्रवण न करनेसे कोई पाप नहीं लगता, किन्तु नित्यकर्म एवं श्राद्धादिक न करनेसे दुरित, पाप-प्रत्यावाय लगता है, क्योंकि श्राद्ध एवं नित्यकर्म प्रथम कर्तव्य है**। जिस साधु गोस्वामि ने सन्यास न लिया हो और परिवारमें रहते है, लौकिक व्यवहारादि करते है, वे सभी गृहस्थकी कक्षामें आते है, यथा यदि वे श्राद्ध नहीं करते तो, पापाचारी होते है।

हम जब गया श्राद्ध करने, गयाजी गए थे, तब हमारे साथ एक विद्वान वकील थे। बस में सबको बार-बार बोलते थे कि, ये श्राद्ध वैसे ही, अपने यहां गुसा दिया है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं। क्यां जैन, बौद्ध, ईसई, मुसलमान श्राद्ध नहीं करते, तो उनके पूर्वजो की सद्गति नहीं होती। हमारे, सब साथी, मेरी तरफ अर्थसूचक देखने लगे और मुझ से भी रहा न गया। मैने उन्हे शांति से पूछा, वकील साब, आप तो सुशिक्षित है, आप किसीके दबाव में आकर श्राद्ध करने आए है या स्वेच्छा से। फिर मैंने उन्हे उनकी कानूनी भाषामें बात करना चालू किया। मैने कहा, आप भारत में रहते है तो, भारत का संविधान या कानून समझ में

आए या न आए मानना पडता है या नहीं । आपको अमेरिका या युरोप के कानून मानने की जरूरत है? अब ये बताओं की, युरोपियन नागरिक को भारत के कानून मानने की जरूरत है? आपने सोनानदीके किनारे, पान खाकर चारबार थूंका, आपको कोई दंड लगा नहीं, यही कार्य अमेरिका में किया होता, तो प्रायः दंड भरना पडता या नहीं । जहां हमारी स्थिति है, उस देश, संस्कृति, सभ्यता, धर्मका अनुशाशन हमें मानना पडता है । वे एकदम शांत हो गए । श्राद्ध के बाद उनकी जिज्ञासा बढी और पूरी यात्रा दरम्यान और्ध्वदैहिक के अन्तर्गत गुप्त ज्ञान-विज्ञान, श्राद्धपिंड, विश्वेदेवा, पार्वणादि की चर्चा करने लगे, इतना ही नहीं, अपने जीवन के अंतिम समय तक, ऐसे धार्मिक प्रश्नो के लिए मेरे संपर्क में रहे । इस्लाममे रोजा न रखनेका, जैनमें वर्षीतप या अठ्ठईतप, बौद्धमें विपश्यना का महत्व है, क्या आप इसका अनुसरते है?

अशास्त्रीय चेष्टाए - श्मशान में लग्नविधि कोई पुराण, रामायण, महाभारत या रामचरित मानसमें हमने नहीं देखी, यथा इसमें मात्र स्वेच्छाचार या स्वच्छन्दता ही है । ऐसे कृत्यों के लिए गीताका मत है - **आत्सम्भाविताः स्तब्धाः धनमानमदान्विताः । यजन्ते नामयज्ञैः ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्** - गीता १६.१७।। (आत्मसम्भाविताः) अपने आपको ही श्रेष्ठ माननेवाले, (स्तब्धाः) गंदे स्वभाव पर अडिग (धनमानमदान्विताः) धन और मानके मदसे युक्त होकर (नामयज्ञैः) नाममात्राके यज्ञोंद्वारा अर्थात् **मनमानी** भक्ति द्वारा (दम्भेन) **पाखण्डसे** (अविधिपूर्वकम्) **शास्त्राविधि रहित** (यजन्ते) पूजन करते हैं । गीतामें श्रीकृष्ण कहते है **तस्माच्छात्रं प्रमाणंते कार्याकार्य व्यवस्थितौ, ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि** (गीता.१७.२४) सभी धर्मार्थे, संस्कारादि कार्योको शास्त्रीय विधि-विधानसे ही करना चाहिए । प्रायः ऐसे बहुश्रुत वक्ताओंने विश्वमान्य गीता भी पढी होती तो, अच्छा होता ।

गर्भाधानात्समारभ्य शरीरशुद्धिहेतवे । षोडशा नरसंस्कारा वात्स्यकोशेत्र वर्णिता: ।। वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकःस्मृतः - विवाह एक वैदिक संस्कार है, जो ऋषिमत एवं शास्त्रीय परम्परासे होना चाहिए । इसकी विधि भी वेदोंका अध्ययन करके, महामना ऋषिओंने गृह्यसूत्रोमें दी हैं । **धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु, संस्कारभास्कर** आदि अनेक ग्रंथो में इसकी प्रणाली बताई है, कहीं पर भी चिता के फेरे हमने नहीं देखे । प्रत्येक विधि-विधान पूर्णतया शास्त्र, विज्ञान एवं तर्कसंगत है, उसमें संशोधन से पूर्व ज्ञान-बुद्धि का संशोधन ज्यादा आवश्य बनता है ।

श्मशानका जो अग्नि है उसे **कव्य** कहते है, यह अग्नि मांसभक्षी, तामस है । सभी अग्निको एक जैसा नहीं मान सकते । हमारे उदर में जठराग्नि - वैश्वार है और अंगारे भी अग्नि है, तप्त धातुमें भी अग्नि है, तो क्या मंदाग्नि होने पर तप्तधातु या अंगारो का पान कर सकते है? सीधा तेजाब पीते है? अग्नि की तीन शक्तियां है, १.दाहक, २ पाचक, ३ प्रकाशक और ये तीनों शक्तियों की प्राधान्यतापर अग्निके प्रकार पुराणों में वर्णित है, इसका प्रमाण इस प्रकार है - लौकिकः पावको अग्निः, प्रथम परिकीर्तितः । अग्निः तु मारूतो नाम , गर्भाधाने विधीयते ।। पुंसवने

चंद्रमसः, शुंगा कर्मणि शोभनः । सीमंते मंगलो नाम, प्रगल्भो जातकर्मणि ।। नाम्निःपार्थिव नामाग्निः, प्राशने तु शिवः तथा । सभ्यनामाथ चूडायां, व्रतादेशे समुद्भवः ।। गोदानेसूर्यनामा तु, विवाहे योजकः स्मृतः। चतुर्थ्यां तु शिखीनाम, धृतिःअग्निःतथाऽपरे ।। आवसथ्येभवो ज्ञेयो, वैश्वदेवे तु पावकः ।। ब्रह्मा तु गार्हपत्येऽग्निः, ईश्वरोदक्षिणे तथा । विष्णुः आहवनीये तु, अग्निहोत्रे त्रयोऽग्नयः।। लक्ष होमे वह्निनामा,कोटिहोमे हुताशनः। प्रायश्चित्तेविटः चैव, पाकयज्ञे तु साहसः।। देवानां हव्यवाहःतु, पितृणां कव्यवाहनः। पूर्णाहुत्यां मृडोनाम, शान्तिकेवरदःतथा।। पौष्टिके बलदः चैव, क्रोधोऽग्निःतु अभिचारिके । वश्यार्थं कामदोनाम, वनदाहे अतिदूषकः।। इसका अर्थघटन किसी विद्वानसे करा लिजीए । विवाहमें जो अग्नि होता है उसे **योजकाग्नि** का नाम दिया है ।

कबर के पास निकाह या कब्रस्तान में लग्न की प्रथा तो ईसाईयों में भी नहीं होगी, किसी भी धर्म या संप्रदाय में जहां अन्येष्टी - फ्युनरल होते हो, वहां लग्न नहीं होते होंगे, इतना विश्वास है । कव्याग्नि के फेरे कदापि नहीं ले सकते । **सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ।। सबदी साखी दोरहा, कहि किहनी उपहान । भगतिनिरूपहीं भगत, कली निन्दहिं वेद-पुरान ।। -** रा.म, आचार्य श्रीतुलसीने भी, अपनी मदोन्मत्त-विलासी विचारधारावाले, वेद-पुराणसे विरूद्ध आचरणवाले वक्ताओं का उल्लेख मिलता है ।

अभी एक विडियो क्लीप देखा, प्रायः मुन्द्रा अहिंसाधाम की कथाका ही है । रामायणमें आरती माबाईलकी फ्लेश लाईट से करते है और अनुकरणशील मनिषावाले सेंकडो लोग भी, यही पाखण्डाचार में जुड जाते है । अब एक और अशास्त्रीय परंपरा चालू हो गई । घी के दिपक की आवश्यकता ही नहीं बची । घी से प्रज्वलित ज्योत पर रशिया एवं जर्मन वैज्ञानिक, जब अनुसंधान कर रहै है, तब हम उसे छोड रहे है । गायके घी से निकलने वाली महत्वपूर्ण गैसों में इथीलीन, आक्साईड, प्रोपलीन आक्साईड, पफार्मल्डीहाईड गैसों का निर्माण होता है। इथीलीन आक्साईड गैस जीवाणु रोधक होने पर आजकल आपरेशन थियेटर से लेकर जीवन रक्षक औषधियों के निर्माण में प्रयोग मे लायी जा रही है। वही प्रोपलीन आक्साइड गैस का प्रयोग कृत्रिम वर्षा कराने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है । अस्पतालों, प्रयोगशालाओं मे इन्ही का प्रयोग किया जा रहा है। ऋषि-मुनियोंने, हमें पूर्ण विज्ञान सम्मत जीना सिखाया था, जिससे हम प्रकृति परख सन्तुलन बनाये रखते चलते थे । ओजोन छेदों को भरने की क्षमता गाय के घी जलने से नीकलने वाली गेस में होती है, इसका अनुसंधान पाश्चात्य वैज्ञानिक कर रहे है । हमें संशय होता है कि, ये बहुश्रुत वक्ताओ की ऐसी चेष्टाए, सनातन वैदिक सभ्यता को समाप्त करनेका, कोई षडयंत्र तो नहीं । आरतीमें घंटाका भी विशेष महत्व है, जो मोबाईल नहीं दे सकता । शंख या घंटा की गूंज की अवधि आपके शरीर के, सभी सात हीलिंग सेंटर को एक्टीवेट करने के लिए काफी अच्छी होती है । ये आपके आसपास के वातावरणको शुद्ध करती हैं । आपको एकाग्र करके ये आपके मन को शांति प्रदान करती हैं, अमंगल या सूक्ष्म

कीटाणुं (आयुर्वेदके जन्तु विभाग में जिसे, अनार्ष कहा है), जो दिखते नहीं, यद्यपि आपकी बुद्धिको क्लुषित करते है, इसे ऐसी ध्वनि तरंगे, दूर भगाती है - जैरे पानी में पडे पत्तों को, पत्थर आदि फेंकने पर, उठी तरंगे दूर भगाकर, जल निर्मल करती है । विज्ञान ने ऐसे यंत्रो का भी आविष्कार किया है कि, जिसकी ध्वनि (अल्ट्रासाउन्ड-एंटी-रैट-सोनार-Bug scare, लॉसकी पीआर, मल्टी-यूज अल्ट्रासोनिक कीट रिपेलर इलेक्ट्रॉनिक कीट कंट्रोल रिपेल माउस बेडबग्स मच, वीईयूप्लग) से चूहें, चिपकली, मच्छरादि दूर भागते है । सप्तशति (चण्डीपाठ) में भी है **घण्टास्वनेन तान्नादानम्बिका चोपबृंहयत्, धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा** । घण्टानाद से देवीने राक्षसों को पराश्त किया है, तो क्या विषैले जन्तु इससे पलायन नही हो सकते ?

दिपकके वैदिक भी मंत्र है, विधि में उसे (साज्यं च वर्तिसंयुक्तं) **भोदीप देवरूपस्त्वं,** देवरूप ही माना है, यदि दिप साथमें संभव नही तो शास्त्रमतसे अनामिका-अंगूष्ठका (दीपमूद्रा) संयोजन करके, स्वयंका आत्मतेज देवता को समर्पित करनेका विधान भी है । **शास्त्रवेद्यमनिष्टसाधनं हि पापम्** (श्रुतिमत) - मोबाईलसे इलेक्ट्क्रोमैग्नेटिक रेडिएशन नीकलते है, जिसके उपयोग से इलेक्ट्क्रोमैग्नेटिक हाइपरसेंसेटिविटी इएचएस का खतरा रहता है । मोबाईल आरती पाखण्डाचार है । **यह मात्र धर्मविरूद्ध ही नहीं, विज्ञान सम्मत भी नहीं है, अतिविनाशक है** ।

मोरारीबापू पीठसे, जल **मार्जन करके लघु यज्ञोपवित** संस्कार करते है, तो रामदेव बाबा सेंकडो स्त्री-पुरूषों को मंच से यज्ञोपवित संस्कार कराते है । यज्ञोपवित जैसे पुनित संस्कार का ऐसा उपहास, वैदिक संस्कृति कितना घोर अपमान है । मैं पूछना चाहता हुं कि, क्या कोई विद्वान, हमारे प.पू.जगद्गुरू, वैष्णवाचार्य इसे शास्त्रीय अनुमोदन दे सकते है ?

सोलह संस्कारोंमें द्विजके लिए **उपनयन प्रमुख** संस्कार है । इसका पूरा विधान **संस्कार भास्कर, धर्मसिंधु, निर्णयसिंधु** नामक ग्रंथो में है और इसका आधार श्रुति-ब्राह्मणग्रंथ, पुराण, स्मृत्यादि है । जो जिस गोत्रका है, उसे, उसीके वेद, गोत्र, प्रवर, शाखा, सूत्र से ही संस्कार किया जाता है । प्रायः ऐसा करनेवालोंको स्ययं का गोत्र-प्रवर-शाखा-सूत्र भी ज्ञात नहीं होंगे, क्योंकि ऐसा मिथ्याचार, कोई पाखण्डी ही कर सकता है, इनके यह कृत्यों का कोई शास्त्राधार नहीं हैं । **संस्कारमन्त्रहोमादीन्करोत्याचार्य एव तु । उपनेयाश्च विधिवदाचार्यः स्वसमीपतः।। आनीयाग्निसमीपं वा सावित्रींस्पृश्य वा जपेत् । वन्द्यास्वीकरणादन्यत्सर्वं विप्रेण कारयेत् ।।** इन ऋषीमतोंका सामान्य अर्थ ऐसे लोग नहीं समझेंगे और उनसे (मिथ्याचारीयों से) ज्यादा अपेक्षा भी नहीं रखी जा सकती । उपनयन मात्र सूती धागा नहीं है, प्रत्येक धागे एवं तंतुमें देवों का आह्वाहन होता है । मेरी **उपनयन एवं षडकर्म** नामकी एक पुस्तिकामें उसका वैज्ञानिक तर्क, पञ्चीकरण के आधार से समझाने का यथामति प्रयास किया है । उसमें देवत्व कैसे आते है, कौनसे देवता उपनित का क्या श्रेय करते है, कैसे करते है? हम पूछना चाहते है

कि, ऐसी गलत विधि किस मूर्ख गुरूने उन्हें सिखाई है? उपनयनकी विधि पूर्ण शास्त्रसंमत करे तो कम-से-कम ८ घंटे लगते है, मंच या पीठ पर से पानी छिटककर उपनयन, मात्र मदारी के खेल या एक पाखण्डाचार, आडंबर से ज्यादा कुछ नहीं है । ऐसे करनेवाले स्वयं विधिवत् उपनित होते तो, उनको विधि ज्ञात होनी ही चाहिए, ये शोर्टकट कैसा? जनसामान्य को मतिभ्रष्ट क्यों करते हो? आपका मद एवं अहंकारी आचरण से सनातन वैदिक सभ्यता का कृपया उपहास या विनाश न करें, ऐसी प्रार्थना पुनः एकबार करते है । यहां आपको शास्त्रदर्पण दिखानेका मन करता है कि **वेदबाह्यव्रताचाराः श्रौतस्मार्त्तबहिष्कृताः । पाषण्डिनेति ख्याता न सम्भाष्याद्विजातिभिः** शास्त्र विरूद्ध आचरणवालो के लिए शास्त्रमें पाषण्डी(पाखंडी) शब्द प्रयुक्त हुआ है, यह मेरा नहीं, शास्त्र का वचन है, सभी सनातन धर्मीयों के लिए । एकबात और भी है, अधिकृत को उपनयन संस्कार कुल-पुरोहित का है, मंत्र दीक्षा भी पिता ऐवं पुरोहित गुप्तरूप से ब्रह्मचारीके दक्षिण कर्णमें करते है । अन्यके पास यह संस्कार करवाना हो तो, कुल पुरोहित की आज्ञा लेना आवश्यक है, अन्यथा **वृत्तिच्छेन** का प्रायश्चित लगता है, ऐसे प्रत्यावायी से उपनित होना पाप हैं ।

इस लेखमें उपरोक्त अवैधानिक गति-विधियों का विरोध किया है, वह पूर्णतया शास्त्रों के आधार पर सप्रमाण है, हमारा किसीसे व्यक्तिगल द्वेष नहीं है । हमारी विद्वद्वर्ग से प्रार्थना है कि, आपका मौन, शास्त्र के प्रति आपके कर्तव्य से पलायनवाद है । आपकी सुषुप्ति सनातन वैदिक सभ्यता का चीरहरण का कारण बनेगी, तो यह इतिहास पर अंकीत रहेगा कि, हम भी कलियुग के धृतराष्ट्र ही है ।

भागवतादि पुराणों में ऐसे पाखण्डी धर्माध्यक्षों की बात कही है, अर्थ स्वयं करा लेना -
वित्तमेव कलौ नृणां जन्माचारगुणोदयः । धर्मन्याय व्यवस्थायां कारणं बलमेव हि ॥
वेदबाह्यव्रताचाराः श्रौतस्मार्त्तबहिष्कृताः । पाषण्डिनेति ख्याता न सम्भाष्याद्विजातिभिः।।
कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ। दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ॥
सबदी साखी दोरहा, कहि किहनी उपहान । भगतिनिरूपहीं भगत, कली निन्दहिं वेद-पुरान ।।
सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥
जो कह झूँठ मसखरी जाना। कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी। कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी॥
मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा। पंडित सोइ जो गाल बजावा॥
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई। ता कहुँ संत कहइ सब कोई॥
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना। मेल जनेऊ लेहिं कुदाना॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी॥
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं बिप्र गुर घात ।।

लेखके अंतमें, संलग्न विडियो लिंकमें श्री मोरारी बापु द्वारा श्मशन में लग्न कराना, दिपक के स्थान पर मोबाईलसे आरती कराना, व्यासपीठ पर मात्र मार्जन करके यज्ञोपवित कराना, ज्योतिष एवं वास्तुका विरोध प्रदर्शित करते हुए कहना कि, हमारे समाज में कोई वास्तु नहीं करता, कोई ज्योतिष में नहीं मानता, फिर भी सब सुखी है और यह मेरा अंगत मत है इत्यादि और इसपर प.पू. जगद्गुरू श्री पुरीपीठाधीश, श्री निश्चलानंदजी महाराजश्री, पुज्य श्री रामभद्राचार्यजी सहित अनेक संतो, महंतो एवं विद्वानोंकी प्रतिक्रीया भी संलग्न है । ऐसे बहुश्रुत वक्ताओं का अनुसरण पूर्णतया अंधश्रद्धा एवं आत्मघातक सिद्ध होगा ।

वैदिक सभ्यता का विरोध यदि स्वयं परमात्मा जन्म लेकर करे, तो वह भी क्षम्य नही है । **वेदनिंदि निंदित भयो प्रकट बुद्ध आवतार** विष्णुके नवमावतार बुद्ध ने वेदमार्ग के विरूद्ध इतना पचार-प्रस्तार किया था कि उसका विनास भगवान आदि शंकर ऐवं कुमारिल भट्टने किया था और उन्हें परास्त करके, भारत से भगाया था । चाहे वक्ता कितना ही समर्थ क्यों न हो, वैदिक सभ्यताओं का हनन करनेवाला राक्षस माना जाता है - **साक्षरा विपरिताकश्च राक्षसा ऐव केवलम्** रावण भी तपस्वी था, विद्वान था यद्यपि उसे राक्षस मानते हैं ।

विद्याकाल में हमारे गुरूजी एक बात कई बार कहा करते थे । एक शिष्यने गुरू को पूछा, **कोऽअन्धः मन्यते भगवन्**, गुरूदेव अंधा किसे कहते है, तब गुरूदे ने अच्छा प्रत्युत्तर दिया श्रुति **स्मृति उभे नेत्रे पुराणंहृदयं स्मृतम्** अर्थात् श्रुति और स्मृति दो नेत्र हैं, और पुराण हृदय है। नारदीय पुराण में शिव की स्पष्टोक्ति है कि मैं पुराणार्थ को वेदार्थ. से अधिक मानता हूँ। सभी वेद पुराणों में सर्वदा प्रतिष्ठित हैं । **एकेन विकलःकाणो द्वाभ्यामन्धः इति स्मृतः** । श्रुति, वेद या स्मृति-पुराण के बीना **काना** और जिसके पास दोनों नहीं है वह **अन्धा** है । आज ऐसे बहुश्रुत वक्ताओं से यह सत्य प्रतीत होता है । इन दोनों की शास्त्रविरूद्ध गतिविधियों के लिए और भी सेंकडों प्रमाण है, लेकिन उनकी समझ में इतना भी आ जोए तो अच्छा ही है ।

इस लेखके माध्यमसे, भारतके सभी विद्वज्जनों, संतो एवं धर्माचार्योको प्रार्थना करता हुं कि, आप इस पुनित अभियान में सम्मिलित हो, सहयोगी बनें । यहीं शास्त्ररूपी भगवान की उत्तम सेवा है, शास्त्र परमात्मा की आज्ञा है, उसकी उपेक्षा या अपमान करनेवालों का रोकना हमारा प्रथम कर्तव्य है । अन्यथा, हमारी सुषुप्ति या पलायनवाद, ऐसे वक्ताओंका पाखण्डाचार बढाएगा । हम सभी विद्वान संगठित होकर जवाब मांगे ऐसी अपेक्षा है ।

संदर्भ लिंक्स

जातियाँ जन्म से निर्धारित होती हैं या कर्म से ? https://youtu.be/EB1f_nv5V-I
https://www.youtube.com/watch?v=EB1f_nv5V-I&feature=youtu.be
वर्णव्यवस्था और जाति अलग हैं — यह भ्रम है https://youtu.be/Uks3lIJ3wR0
https://www.youtube.com/watch?v=Uks3lIJ3wR0&feature=youtu.be
वर्ण और जाति में क्या अंतर है ? https://youtu.be/lctLITpRfC8
https://www.youtube.com/watch?v=lctLITpRfC8
मोरारी बापू के चिता पर विवाह कराने पर पुरी के शङ्कराचार्य —अपनी सीमा का अतिक्रमण न करें
https://youtu.be/HUkkns6v4Jk https://www.youtube.com/watch?v=HUkkns6v4Jk
श्मशान मे विवाह क्यों नहीं करना चाहिए https://youtu.be/6nNStJBHM5A
https://www.youtube.com/watch?v=6nNStJBHM5A
मुरारी बापू द्वारा श्मशान मे विवाह के संबंध मे पुज्य जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी
https://youtu.be/xIuHpvA0cHA https://www.youtube.com/watch?v=xIuHpvA0cHA
श्मशान में शादी करवाई मोरारी बापू ने , महुवा, भावनगर, गुजरात /सलाम दिल्ली न्यूज़
https://www.youtube.com/watch?v=cQYwJEVBpLM https://youtu.be/cQYwJEVBpLM
शमशान घाट पर विवाह, कितना शास्त्रसम्मत? संतबेतरा अशोक द्वारा विश्लेषण
https://youtu.be/EMh1PM7sr74 https://www.youtube.com/watch?v=EMh1PM7sr74
Ramkatha Aarti Om Jai Jagdish Hare https://youtu.be/5JL30CDX7Q8
https://www.youtube.com/watch?v=5JL30CDX7Q8
Morari bapu na bakvas no virodh https://youtu.be/BTAoRjmzHes
https://www.youtube.com/watch?v=BTAoRjmzHes
ऐसा क्या कहा जगतगुरु रामभद्राचार्य महाराज ने मुरारी बापू को ,कि पूरे देश मे मच गया हल्ला !
https://www.youtube.com/watch?v=PXk-roTRtLE
मुरारीबापु को एक ब्राह्मणने दिया सटीक जवाब...
https://www.youtube.com/watch?v=Mo5eaQyKfcw
ज्योतिष को पाखण्ड कहने वाले स्वामी रामदेव को शास्त्रार्थ की चुनौती https://youtu.be/YT8CgHIvxns
https://www.youtube.com/watch?v=YT8CgHIvxns
बाबा रामदेव को ब्राह्मणों का चैलेंज माई का लाल है तो शास्त्रार्थ करे
https://www.youtube.com/watch?v=et8cUor3ghM
रामदेव के भाई से मिली महत्त्वपूर्ण जानकारी https://youtu.be/PYV0oNf1jHo
https://www.youtube.com/watch?v=PYV0oNf1jHo
बाबा रामदेव के ताऊ ने किया उनके सीरियल का पर्दाफ़ाश https://youtu.be/FU3Bn5fjM4U
https://www.youtube.com/watch?v=FU3Bn5fjM4U
स्वामी रामदेव की ज्योतिष एवं ग्रहो पर दी गयी टिपण्णी का विरोध https://youtu.be/GV-aOL-LGjE
https://www.youtube.com/watch?v=GV-aOL-LGjE
रामदेव का पर्दाफ़ाश। झूठ और पांखण्ड रामदेव सीरियल के विरोध में यादव समाज की पुकार
https://youtu.be/qDVWyMYAuU4
https://www.youtube.com/watch?v=qDVWyMYAuU4
बाबा रामदेव का पर्दाफ़ाश उनके ही गाँव से https://youtu.be/qDVWyMYAuU4
https://www.youtube.com/watch?v=mRQFtkzUJg0
बाबा रामदेव ने किया ब्राह्मणों का अपमान https://youtu.be/JESUe5I6soA
https://www.youtube.com/watch?v=JESUe5I6soA
पुण्य प्रसून के सवाल पर भड़क गए रामदेव https://www.youtube.com/watch?v=I40jODVYX3A
रोहतक में रामदेव एक संघर्ष सीरियल के विरोध में उतरा ब्राह्मण समाज https://youtu.be/lYPmgzoCIeE
https://www.youtube.com/watch?v=lYPmgzoCIeE
राम देव एक संघर्ष सीरियल जल्द ही बंद किया जाए https://www.youtube.com/watch?v=pRwOKhqGsgo
बाबा रामदेव ने किया ब्राह्मणों का अपमान, 13 लाख ब्राह्मण हुए एकजुट https://youtu.be/3BzlKjvF3pA
https://www.youtube.com/watch?v=3BzlKjvF3pA

ब्राह्मणों की छवि धूमिल करने एवं जयोतिष को पाखण्ड कहने पर बाबा रामदेव को जवाब https://youtu.be/gvWXEDnzVWU
https://www.youtube.com/watch?v=gvWXEDnzVWU
Exclusive: How Ramdev tried to fool policemen
https://www.youtube.com/watch?v=fVVfyUzD0XI
Ramlila crackdown: What happened that night?
https://www.youtube.com/watch?v=ZtExN2Uk-ic
किसने किया बाबा रामदेव का विरोध ? बाबा रामदेव ने जोड़े हाथ https://youtu.be/mH8auO34jyE
https://www.youtube.com/watch?v=mH8auO34jyE
बाबा रामदेव ने ब्राह्मणों के खिलाफ टिप्पणी किया,देश भर में रामदेव का ब्रह्म समजोंका विरोध प्रदर्शन
https://youtu.be/YZeQMzTDSg8
https://www.youtube.com/watch?v=YZeQMzTDSg8
रामदेव के खिलाफ ब्राह्मण समाज का विरोध प्रदर्शन https://youtu.be/9kkIukXavVM
https://www.youtube.com/watch?v=9kkIukXavVM
Falit jyotish kyoun galat aur pakhand par adharit he :swami Ramdev
https://youtu.be/m_qNfGWnzwU
https://www.youtube.com/watch?v=m_qNfGWnzwU
अंधविश्वास पर स्वामी रामदेव https://youtu.be/m_qNfGWnzwU
Falit jyotish kyoun galat aur pakhand par adharit he :swami Ramdev
https://youtu.be/m_qNfGWnzwU https://www.youtube.com/watch?v=m_qNfGWnzwU
डॉ धनेशमणि त्रिपाठ ने स्वामी रामदेव से ज्योतिष विषय पर माँगा जवाब https://www.youtube.com/watch?v=o-OqP4cZE-U
योगगुरु बाबा रामदेव का विवादित बयान https://youtu.be/1HOESj7vrtI
https://www.youtube.com/watch?v=1HOESj7vrtI
मृत्यु के बाद क्यों करते हैंं श्राद्ध? https://youtu.be/5LAQjlr2ScQ
https://www.youtube.com/watch?v=5LAQjlr2ScQ
वैदिक वर्ण व्यवस्था को न मानने वालों के लिए प्रकृति का अभिशाप ! https://youtu.be/GkQvxUcsTig
जातियाँ जन्म से निर्धारित होती हैं या कर्म से ? https://youtu.be/EB1f_nv5V-I
यज्ञोपवीत संस्कार क्या है और नारीओं को यह कराना चाहिये ? https://youtu.be/MslbsgaZ9jw
हमारा पहला जन्म किस पूर्व जन्म / कर्म के आधार पर हुआ ? https://youtu.be/XlaFUdEbOD0
वर्णसंकरता और कर्मसंकरता के चपेट से कुल को बचाना चाहिए https://youtu.be/rb4_KK9zQKM
क्या नारियाँ भी मंदिर में पूजा कराने में अधिकृत हो सकती हैं ? https://youtu.be/79bHyZDSgwM
गोस्वामी (गुसाई) समाज के व्यक्ति की मृत्यु होने पर अग्नि संस्कार सही है या गलत https://youtu.be/DvV_SHCTNyQ
मृत्यु संस्कार क्या है? https://youtu.be/8sGYvA2SPYM
वैदिक वर्ण व्यवस्था को न मानने वालों के लिए प्रकृति का अभिशाप ! https://youtu.be/GkQvxUcsTig
श्राद्ध का महत्त्व — पितृ पक्ष 2018, Gaya, Bihar https://youtu.be/1NGCGLtOqfg
श्राद्ध कर्म - https://youtu.be/ppM8DdQW2fk
श्राद्ध - तर्पण की महिमा, आवश्यक्ता, पूर्ण विधि ॥ Shri Rajendra DasJi Maharaj https://youtu.be/GfUpju5P-Ps
16 संस्कार-भाग 7 | "अंत्येष्टि संस्कार" की आवश्यक क्रियाएँ व कर्म - https://youtu.be/p2PmFqmCHjo
Rajiv Dixit - बाबा रामदेव असल में बाबा के रूप - https://youtu.be/xedqko29xUE
वर्ण व्यवस्था के रहस्य को ना समझ कर कल्पित ढंग से बांटने का कुचक्र क्या है ?
वेद और विज्ञान को किसने सबसे पहले ढूंढा था ?- https://www.youtube.com/watch?v=KQJFP9JFRQc
पतंजलि घी का सच https://www.youtube.com/watch?v=ax2OsIZu6yQ
रामदेव द्वारा ज्योतिष का विरोध https://www.youtube.com/watch?v=LwvYo_iyO0s
सुनिए बाबा रामदेव का वर्ण व्यवस्था ज्ञान https://www.youtube.com/watch?v=JUE_sog-JyA
वर्ण और जाति में क्या अंतर है ? https://youtu.be/lctLITpRfC8
वर्ण व्यवस्था के रहस्य को ना समझ कर कल्पित ढंग से बांटने का कुचक्र क्या है ? https://youtu.be/KQJFP9JFRQc
वर्णव्यवस्था और जाति अलग हैं — यह भ्रम है https://youtu.be/Uks3lIJ3wR0

<iframe width="560" height="315" src="https://www.youtube.com/embed/vyQ8gjtU2qw?start=4" frameborder="0" allow="accelerometer; autoplay; encrypted-media; gyroscope; picture-in-picture" allowfullscreen></iframe>

मेरे कुछ प्रकाशित लेखों की लिंक्स

http://www.sanskritbharat.com/%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%8B-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%85%E0%A4%B8%E0%A4%B0-effect-of-mantras/
http://www.sanskritbharat.com/%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE-%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82-%E0%A4%88%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%82%E0%A4%AA/
https://www.scribd.com/document/395277585/Dharma-Avm-Ishwar
https://www.scribd.com/document/395277736/Mantra-Shastra
https://www.scribd.com/document/395278345/janoi
https://www.scribd.com/document/395278556/Guru
http://www.sanskritbharat.com/%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%8B-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%85%E0%A4%B8%E0%A4%B0-effect-of-mantras/
http://www.sanskritbharat.com/%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE-%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82-%E0%A4%88%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%82%E0%A4%AA/